सह-अस्तित्व : एक वैचारिकी

विकास सिंह

संपादक

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

गाजीपुर

लोकनाथ पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : २०१९

ISBN 978-93-81123-92-8

© प्रकाशक

Email- prcbsbi@gmail.com

lnpvns@gmail.com

Web : www.philosophical researchcouncil.com

मुद्रक

फिलोसोफिकल रिसर्च कौंसिल

प्रकाशक

लोकनाथ पब्लिकेशन

लखनपुर भुल्लनपुर

वाराणसी २२११०८

सप्तम् पुष्प

संस्कृत वाङ्मय में आचार-विचार एवं सह-अस्तित्व

डॉ.अनीता कुमारी•

संस्कृत वाङ्मय भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विचारों का रूचिर दर्पण है। अनादि काल से भारत में संस्कृत भाषा एवं भारतीय संस्कृति प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रही है। कहा गया है-'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिश्तथा। संस्कृत वाङ्मय भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का गौरव है, जो सदाचरण के नैतिक बोध से समृद्ध है। संस्कृत वाङ्मय भारतीय संस्कृति में निहित त्याग और भोग का ऐसा मंजुल समन्वय प्रस्तुत करता है, जिसे मानव अपने जीवन में स्वीकार कर उसे सुखी व उदात्त बना सकता है। ऐसी विश्व संस्कृति की आधारशिला व उद्धरण संस्कृत वाङ्मय में प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोचर होते है।

भारत कई मायनों में बाकी दुनिया से अलग है। यह वह जमीन है, जहाँ सभ्यता ने सबसे पहले कदम रखे, परम्परायें सबसे पहले पनपी। सत्य और अहिंसा के अमृत का स्त्रोत भी सर्वप्रथम यहीं से फूटा। लिहाजा इस जमीन को दुनिया का टुकड़ा नही, बल्कि सांस्कृतिक उपहार कहा जाना चाहिए। मार्क ट्वेन की यह पंक्तियां पढ़कर हम गौरवान्वित अनुभव करते है, किन्तु आज का भारत देश आधुनिक आचार-विचार की आंधी में फंसकर भारतीय संस्कृति को पतनोन्मुख कर रहा है, यह तथ्य विचारणीय है। इसका प्रमुख कारण है हमारा संस्कृत वाङ्मय से दूर होकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर अन्धाधुन्ध झुकाव।

• एसोसिएट प्रोफेसर, रा० महिला पी०जी कालेज, गाजीपुर

वर्तमान समय में मानव पुरूषार्थ चतुष्टय में निहित धर्म के महत्व को गौण कर अर्थ एवं काम के प्रति अतिलोलुप होकर इस स्तर पर पहुच गया है कि मानवता ताक पर रख दी गयी है। इतना ही नही, भ्रष्टाचारी लोग धन को सभी गुणों का आश्रय स्थल मानते हुए धन के महत्व को इस प्रकार वर्णित किया है-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः,स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः ,सर्वे गुणाः काचनमाश्रयन्ते।।[१]

अर्थात् जिसके पास धन है, वही मनुष्य कुलीन है, वही विद्धान है, वही शास्त्रज्ञ है और गुणों को जानने वाला है, वही अच्छा वक्ता है और वह ही दर्शनीय है। सभी गुण धन का आश्रय लेते है। आधुनिक बनने की होड़ में मनुष्य भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों से उदासीन हो रहा है, जिससे मन की पवित्रता का ह्रास हुआ है एवं पर्यावरण भी प्रदूषित हुआ है। फलस्वरूप मनुष्य विभिन्न खतरनाक रोगों से ग्रसित हो रहा है, तो दूसरी ओर मनुष्यों में लालच की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे देश में अनेक घोटाले, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, भ्रष्टाचार, नकली मुद्रा, काला बाजारी आदि अनेक अनैतिक आचरण से देश की अर्थव्यवस्था शिथिल हो गयी है और देश की प्राचीन गौरवमयी छवि धूमिल हो रही है।संस्कृत वाङ्मय में निहित वेद आदि ग्रन्थ मानवों को यज्ञादि करने की प्रेरणा देता है। कालिका पुराण में वर्णित है -

सर्व यज्ञमयं जगत। [२]

अर्थात् यह सम्पूर्ण जगत यज्ञमय है। महर्षि वशिष्ठ ने कहा है -

यज्ञात् सृष्टिः प्रजायन्ते अन्नानि विविधानि च।
तृणान्यौषधान्यथ-च फलानि विविधानि च।
जीवानां जीवनार्थाय यज्ञः संक्रियतां बुधैः।। [३]

---

१. नीतिशतकम्: कवि भर्तृहरि
२. कालिका पुराण ३१/४०
३. यज्ञ मीमांशा: पं० श्रीवेणी राम शर्मा गौड़ पृ० २४

अर्थात् यज्ञ से सृष्टि चलती है, यज्ञ से विविध प्रकार के अन्न, पशु, औषधि और फल होते है। अतः बुद्धिमानों को चाहिए कि वे प्राणिमात्र के जीवन के लिए यज्ञ को अवश्य किया करें। यज्ञ से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। विष्णु पुराण में कहा गया है-यज्ञोऽयं सर्वकामधुक्।[1]

नारायण पंडित ने 'हितोपदेश' में सम्पूर्ण वसुधा को परिवार मानने की शिक्षा दी है। इसका अनुसरण करने पर आपसी कलह, ईर्ष्या और वैमनस्य समाप्त होगा एवं प्रतिदिन होने वाले हत्या, चोरी, बलात्कार आदि जघन्य अपराधों तथा कलुषित विचारों से हम मुक्त हो सकेंगे-

अयं निज परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[2]

अर्थात् अपने पराये की गणना क्षुद्र हृदय वाले व्यक्तियों में होती है। उदारमना व्यक्ति सम्पूर्ण वसुधा को अपना परिवार मानते हैं।इस भावना की अभिव्यक्ति इससे सुन्दर शब्दो में नही की जा सकती है।

वर्तमान समय में समाज में भ्रष्टाचार का जिस प्रकार से समाजीकरण हुआ है, वह नितान्त चिन्ताजनक है। इससे नैतिक व चारित्रिक पतन को बढ़ावा मिला। लोभ के कारण आज समाज में चोरी, डकैती, हत्या, कालाबाजारी, भोग विलास आदि बढ़ गया है। संस्कृत वाङ्मय हमे लोभ से दूर रहने की प्रेरणा देता है। ईश्वर प्रदत्त सभी पदार्थो का त्याग भाव के साथ उपभोग करना चाहिए। ईशावास्योपनिषद की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।[3]

कवि भर्तृहरि ने नीतिशतकम् में कहा है -

---

१. विष्णु पुराण ३/८/१
२. हितोपदेश: नारायण पंडित १/६९
३. ईशावास्योपनिषद १/१

तृष्णां छिन्धि भजक्षमा जहि मदं पापे रतिं मा कृथाः।
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधु पदवी सेवस्य विद्वज्जनम् ।। [१]

आज मानव के पतन का मूल कारण लोभ है। लोभ के कारण मनुष्य असत्य भाषण, हिंसा आदि अनैतिक कार्यो में लिप्त होकर पतन की राह पर चल पड़ता है। हितोपदेश में लोभ के दुर्गुणों को इस प्रकार वर्णित किया है-

लोभात् क्रोधः प्रभवति, लोभात् कामः प्रजायते।
लोभात् मोहश्च नाशश्च, लोभः पापस्य कारणम्।।[२]

अर्थात् लोभ से क्रोध, काम और मोह उत्पन्न होता है और लोभ ही पाप का कारण है। अतः मनुष्य का उद्देश्य धन एकत्रीकरण नही, बल्कि विहित कर्मो को करते हुए सौ वर्षो तक जीने की कामना करनी चाहिए।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।[३]

आज आधुनिक आचार विचारों के सन्दर्भ में संस्कृत वाङ्मय का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि आज परिवार और समाज का आचार विचार पूर्णतः परिवर्तित हो चुका है। भारतीय संस्कृति के मूल तत्व वृद्धों एवं गुरूजनों का सम्मान, संयुक्त परिवार, एक पत्नी व्रत, पंच महायज्ञ, निष्काम सेवाभाव, पुरूषार्थ चतुष्टय आदि भावों का विचारों की स्वतंत्रता से उनका विघटन हो गया है। अधिकांश मनुष्य आधुनिकता की दौड़ में नैतिक अनैतिक का विचार न करते हुए पथभ्रष्ट होकर मातृदेवो भव, पितृदेवों भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव तथा वृद्धो का अभिवादन करने में संकोच कर रहे हैं, जो दुःख का विषय है। आज समाज में वृद्धाश्रम की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। संयुक्त परिवार खण्डित हो रहे है। मनुस्मृति मे कहा गया है -

---

१. नीतिशतकम्: कवि भर्तृहरि ७८ वा. श्लोक
२. हितोपदेश - २७ वा श्लोक पृष्ठ सं० ७३
३. गीता ३/८

साम्प्रदायिकता आदि समस्याओं से मुक्त होकर पुनः अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल होगा। मनुस्मृति में कहा गया है -

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।

अर्थात् जो परस्त्री को मातृवत्, दूसरे की सम्पति को मृत्तिकावत् और सभी प्राणियों को आत्मवत् देखता है, वही ज्ञानी है।[१]

उपर्युक्त शोधपत्र के विवेचन से स्पष्ट है कि आज भारत ही नही, प्रत्युत विश्व को संस्कृत वाङ्मय के अनुशीलन की आवश्यकता है। संस्कृत वाङ्मय में भौतिक ज्ञान-विज्ञान के साथ ही नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के तत्व समाहित है। संस्कृत वाङ्मय के अनुशीलन से समाज में समानता, बन्धुत्व तथा समरसता का भाव जाग्रत होगा और पुनः भारत जगतगुरू बन सकता है। आवश्यकता है संस्कृत वाङ्मय को सुग्राह्य और लोकप्रिय बनाने की। श्रीमान् कपिल सिब्बल के अनुसार: - संस्कृत के समृद्ध वाङ्गमय को लोकप्रिय बनाने के लिए इसे वर्तमान परिदृश्य से जोड़ते हुए आसान रूप से पेश किये जाने की जरूरत है। तभी यह भाषा अंग्रेजी की भांति लोकप्रिय और सुग्राह्य होगी। संस्कृत ज्ञान का अथाह समुद्र है। जिसमे छिपे मोती को सामने लाने की जरूरत है।

स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य में मनुष्य को सुयोग्य मानव बनने की प्रेरणा देने वाले अनेक ऐसे प्रसंग है जिनको बचपन में बालकों के मध्य कथा, नाटक धार्मिक कृत्यों आदि के माध्यम से संस्कार रूपी बीज का वपन करने से देश को सुयोग्य नागरिक रूपी फल की प्राप्ति होगी और हमारा देश उन्नति की राह पर चलकर विश्व पटल पर अपनी स्वर्णिम आभा बिखेरता हुआ अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त कर लेगा और राम राज्य बनने तक हमारा यह सपना साकार होगा –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।

---

१. मनुस्मृति २/१८